वाटरवर्क्स से जो पूना से १० मील है शहर और छावनी में पानी पहुंचता है और खेतों को पानी दियाजाता है, किला सिंघर और पुरन्धर जो पूना से १० और २० मील के फासले पर है आबहवा बदलने के स्थानों का काम देते हैं नगर के भद्वार पेट में एक टिकट घर बना हुआ है जहां पर जी० आई० पी० और सदरन महट्टा रेलों पर जानेवालों को सब दरजों के टिकट मिल सक्ते हैं। सिरूर और पूना के बीच में हर रोज़ डाक का तांगा चलता है॥

स्टेशन पर वेटिंग और रिफ्रेशमेण्ट रूम अर्थात् आराम और खाने के कमरे हैं और स्टेशन के पास एक हिन्दू होटल है॥

पूना बम्बई से जी० आई० पी० रेलवे में ११६ मील है तीसरे दरजे का किराया १॥७) लगता है॥

पूनपून।

ईस्ट इण्डियन रेलवे पर कलकत्ते से ३४ मील और बांकीपुर से ८ मील छोटा सा गांव है जो इसी नाम की नदी के किनारे पर बसा हुआ है, इस नदी को हिन्दूलोग पवित्र मानते हैं और गया जाने वाले यात्री इस स्टेशनपर उतर कर नदी में स्नान करते हैं॥

कहते हैं कि इस के पानी में स्नान करने से सब पाप नष्ट हो जाते हैं और पिण्ड नदी में डालते हैं कि उन के मरे हुए सम्बन्धियों की आत्मा को पहुंच जाएं॥

इस जगह कोई सराय, धर्मशाला या बंगला नहीं बहुत लोग खुले मैदान में ठहरते हैं और कुछ बनियों की दुकाने किराये पर ले लेते हैं॥

कलकत्ते से पूनपून का तीसरे दरजे का किराया ३॥≋)। लगता है ॥

पहोवा ।

पंजाब के ज़िला करनाल में एक पुराना नगर है और थानेश्वर से १७ मील पश्चिम की तरफ पवित्र दरया सरस्वती के किनारे पर आबाद है। पहोवा को पहले पृथिदका अर्थात् चौड़ा पानी कहते थे, इसका सबब यह है कि जब सरस्वती में बहुत पानी आ जाता है तो इस नगर के इर्द गिर्द की नीची ज़मीन पानी से ढक जाती है, यह नगर थानेश्वर की हद में वाक़े है और थानेश्वर से दूसरे दरजे पवित्र समझा जाता है, यहां पुराने मीनारों के कुछ निराले खण्डर हैं और दो दरवाजे हैं जिन में से हर एक पर मूर्तियां बनी हुई हैं। सरस्वती पर हर साल चैत्र और कार्तिक (मार्च सितम्बर) के महीनों में एक बड़ा भारी मेला होता है जिस में २० से २५ हजार तक और कभी कभी एक लाख तक यात्री जमा होजाते हैं ॥

थानेश्वर में पहोवा जाने के लिये यक्के और बहलियां मिलती हैं यक्के का किराया १) और बहली का १।) लगता है इस नगर में एक बड़ी सराय ४ धर्मशालायें और एक बंगला है ॥

थानेश्वर कलकत्ते से १००० मील और अम्बाले से २६ मील है तीसरे दरजे का किराया ६।≋) और ।≋) लगता है ॥

पिण्ड्रारोड् ।

यह बंगाल नागपुर रेलवे का स्टेशन पिण्डराघाट की चोटीपर बसा हुआ है इस के २५ मील पश्चिम की तरफ अमर नाथ

का बहुतही पवित्र मन्दिर है जो नर्बदा दरिया के निकाउ पर है ॥

यहां से तीन दरिया नर्बदा, सोन और जोहिला निकलते हैं और सब का एक ही जगह निकास है। जहां से यह दरया अलग अलग होते हैं वह जगह बड़ी सुहावनी है और हिन्दु लोग उस को बहुत दिनों से पवित्र मानते हैं। अमरकंकट के सिरपर मैकाल पर्ब्बत है उस पर से हर्द गिर्द बड़ा सुन्दर दिखाई देता है। कपिल-दवाड़ा, मएडया और गुलबकावली के महल यात्री लोग देखने जाते हैं, माघ के महीने में यहां एक मेला होता है पर सूर्य्य और चान्द ग्रहण के दिन स्नान करने के लिये हज़ारों यात्री नर्बदा को जाते हैं ॥

फोरसाइथ साहिब अपनी किताब में लिखते हैं कि देवताओं ने कलियुग के ५००० वर्ष के लिये गङ्गा जी को अच्छा माना पर नर्बदा सारे दरियाओं से पवित्र है, कलियुग अङ्गरेजी सम्बत १८९९ में हो चुका और अब नर्बदा के ब्राह्मण आश कर रहे हैं कि नर्बदा सब तीर्थों से बढ़जाये गा ॥

अमरकंटक को अब पक्की सड़क बन गई है और वहां जाने वालों को पेन्डरा रोड़ स्टेशन पर सब भांति की मदद दी जाती है अमर कंटक में कई धर्मशालायें हैं ॥

पेन्डरा रोड स्टेशन कलकत्ते से बंगाल नागपुर रेलवे में ५०८ मील है तीसरे दरजे का किराया ५।≈)॥ लगता है ॥

पेन्नेरु।

मद्रास रेलवे की नार्थवैस्टर्न (उत्तर पूर्बी) लैन पर एकस्टेशन है जो मद्रास शहर से २३६ मील है और तीसरे दरजे का किराया

२॥) लगता है। स्टेशन से दो मील दक्षिण की पेन्नेरु दरिया के किनारे एक छोटा सा मन्दिर है जिसको असूवुथ नारायण कहते हैं इसके दर्शन को बहुत लोग आते हैं। इस मन्दिर के असले की बाबत कहते हैं कि एक पुरुष जिसका नाम सुंइगम बटलू था इस जगह तप किया करता था एक दिन देवता उसके साम्हने आया और उसकी बिनती मंजूर होगई। इस पुरुष की यादगारी में यह मन्दिर बनाया गया था। स्टेशन पर और इर्द गिर्द के गाओं में बैल गाड़ियां मिल सक्ती हैं यहां धर्मशाला कोई नहीं यात्री लोग एक टोप के नीचे ठहरते हैं॥

इस जगह कपड़ा बनता है और रूई, नील और अनाज का व्योपार होता है॥

पेरुवरुनी।

साऊथ इण्डियन रेलवे की डिस्टिक्ट बोर्ड ब्रांच लाइन पर स्टेशन है। इसका फासला मद्रास बीच स्टेशन से २६१ मील और तीसरे दरजे का किराया २॥।≋) लगता है। नगर स्टेशन से एक मील दक्खिन पश्चिम की तरफ है। यहां से १० मील नगराम में एक मन्दिर है जिस के थईपुशम और पंगूनी ऊतशावम दो तेहवार होते हैं जिन में पांच पांच हज़ार लोग आते हैं। नगराम जाने के लिये पेरुवरुनी में बैलगाड़ियां मिलती हैं एक गाड़ी का किराया १) लगता है॥

नगराम और पेरुवरुनी में एक एक चोलतरी है पर अंग्रेजों के ठहरने की कोई जगह नहीं॥

पैगन ।

यह नगर बर्मा में ईरावदी दरिया पर प्रोम से १६० मील उत्तर की तरफ और बर्मा की पहिली राजधानी अमरा पुरा से ७० मील नीचे को वाके है पहले यहां दो नगर थे जो पुराने और नए पैगन कहलाते थे। पुराने पैगन की जगह पर अब ईंटों के मकानों और डगबों के खिण्डर हैं ॥

यह नगर उजड़ गया है पर अब भी करीब सौ मकानों के बाकी हैं जिन में से बाज़े बहुत बड़े हैं और ६०० छै सौ साल के बाद अबतक अच्छी हालत में है ॥

पगौडों के सिवाय पैगन में अनगिगत मन्दिर हैं इन में मूर्त्तियों और पूजा के लिये जगह बनी हुई हैं और छत में संगतराशी और गिलट का काम किया हुआ है ॥

मूबेली रेलवे पर माइगयान स्टेशन प्रोम के पास है। यह स्टेशन रंगून से ३७७ मील है और तीसरे दरजे का किराया ४॥।=)। लगता है ॥

प्रोम ।

मुल्क ब्रह्मा में यह नगर रंगून से १६० मील उत्तर की ओर ईरावदी दरिया के किनारे पर है। पिछले युग में एक बड़े राजा की राजधानी थी। इस नगर का बड़ा पगोड़ा जिस को शवेसानडा कहते हैं ईरावदी से आधा मील एक पहाड़ी पर ८० फीट ऊंचा है और एक चबूतरे पर बना हुआ है, इस के गिर्द ८३ और सुनहरी मन्दिर हैं, जिन में बुद्ध की मूर्त्तियां रक्खी हैं। इस मन्दिर की बाबत कहते हैं कि यह एक ज़मुर्रद के सन्दूक पर बना हुआ है जो ७ सोने की सिलाखों पर टिका हुआ है। सन्दूक में बुद्ध

के सिर के तीन बाल हैं। राजे और धनी लोग सदा इस मन्दिर को बढ़ाते और सजाते रहे हैं। मार्च के महीने में हरसाल यहां एक बड़ा भारी मेला होता है जिस में हज़ारों बुद्ध यात्री आते हैं। शवैनटडा पगोड़ा जो १६ मील दक्षिण को है। ऊंची जगह पर बना हुआ है। इसके नीचे मैदान है जहां साल के शुरू में एक मेला होता है जिस में २० हज़ार यात्री एकट्ठे होते हैं। कहते हैं यह पगौड़ा दत्तरत्त बौंग की स्त्री ने बनवाया था। राजा दत्तरत्ता बौंग अंग्रज़ी सम्वत् से पहिले ४४३ से ३७२ तक राज करता था सूर्य निकलने से छुपने तक जहां तक पगौडे की छांए पड़ती थी राजा दत्तरता बौंग ने सारी ज़मीन पगौडे के नाम कर दी थी॥

प्रोम ब्रह्मा रेलवे पर रंगून से १६१ मील है तीसरे दर्जे का किराया २।)। लगता है॥

फतवा।

अहाता बंगाल के ज़िला पटना में ईस्ट इण्डियन रेलवे पर पटना शहर से ८ मील और कलकत्ते से ३२४ मील एक नगर है जो गंगा जी और पूनपून के सगम पर बसा हुआ है। डाक्टर बुकनन हेमिलटन साहिब १८१२ में लिखते हैं कि उस वकत यह बड़ा शहर था और इसमें २००० घर और १२ हज़ार की आबादी थी और इस जगह पर कपड़ा बनता था और बहुत व्योपार होता था। रेल और दरिया के किनारे पर होने के सबब व्योपार के लिये यह बहुत अच्छी जगह है॥

फ़तवा में हर साल ५ तेहवार होते हैं और उन दिनों में अनगिनत यात्री यहां आते हैं और वार्नी द्वादशी के मौक़े पर १० से १२ हज़ार तक यात्री स्नान करने के लिये आते हैं॥

कलकत्त से फतवा तक तीसरे दरजे का किराया ३॥~)। लगता है

फरेंचरावस।

मद्रास अहाते में है। इस जगह का नाम फ्रेंचं राक्स इस सबब से है कि हैदर और टीपू की फ़रांसीसी पलटनें इसी जगह रहा करती थीं। देशी लोग इस नगर को हिरोदी कहते हैं। यहां से कई जगहों को सड़कें जाती हैं। उत्तर पश्चिम की तरफ़ सड़क चिंकुराली को जाती है जहां वेब साहिब एक पहिले अंग्रेज़ी रेज़िडण्ट का याद्गार मीनार है। आज कल इस मीनार को रामखम्मा कहते हैं क्योंकि मैसूर की पलटनों और अंग्रेज़ों की बागी फ़ौज की जो सेरंगापटम को जारही थी इस जगह लड़ाई हुई थी। चिंकुराली में एक और बड़ी लड़ाई हुई थी जिस में हैदर को मरहट्टों से हार हुई थी। उत्तर की तरफ़ और आगे जैनियों के गावं सरवन बेलगोला में एक ऊंची पहाड़ी पर गौत्मेश्वाड़ा की बड़ी भारी मूर्त्ति और अनगिनत मन्दिर हैं। पत्थर पर पुराने कतबों से मालूम होता है कि भद्रबाहु जो जैनमत का बढ़ाने वाला था और उस का चेला चद्रगुप्त जिस को यूनान के तारीख़ वालों ने सन्द्राकोपटिस लिखा है इसी जगह मरे थे उत्तर पूर्व की तरफ़ सड़क मेलूकोट को जाती है। यह श्रीबैष्णव लोगों की बड़ी पवित्र जगह है यहां उनका गुरू रामानुजा रहा करता था। इस जगह उनके बहुत से मन्दिर भी हैं। मेलूकोट के रस्ते में तेन्नूर है जो होयसाला राज्य की पहले राज्यधानी थी। पास एक सुन्दर तालाब है जिस को मोतीतला कहते हैं। लोग कहते हैं कि इसको रामानुजाचार्य्य ने बनाया था। इसका आज कल का नाम दक्खिन के सूबादार नासिरजंग ने रक्खा था। फ्रेंचराक्स से मेलूकोट का फ़ासला १८ मील और हिरोदी

से १५ मील है। हिरोदी में बैल गाड़ियां बहुत मिलती हैं। एक गाड़ी का किराया एक रुपये से २ रुपये तक होता है॥

फ़रैंचराक्स सर्दनमरहटा रेलवे की शाख पूना नंजनगढ़ पर स्टेशन है पूना से इसका फ़ासला७०० मील है तीसरे दरजे का किराया ८॥।≈)॥ लगता है

बकसर।

अवध के ज़िला उन्नाओ में गंगाजी के बाएं किनारे पर एक गांव है चंदीका देवीका इस जगह बड़ा मशहूर मन्दिर है और हिन्दू लोग गंगाजी को इस जगह पर और सब मुकामों से ज्यादा पवित्र समझते हैं। कार्तिक के महीने में यहां स्नान का बड़ा भारी मेला होता है जिस में १००००० के क़रीब लोग गंगाजी में स्नान करने के लिये आते हैं। गांव में एक मदरसा और एक संस्कृत पाठशाला है॥

बकसर ग़दर में वफ़ादारी और जुलाई १८५७ के कानपुर के क़तल के बचे हुए लोगों को पनाह देने के सबब स्वर्गवास महाराजा दिग्विजैसिंह के० सी० एस० आई० को सर्कार की तर्फ से मिला था॥

उन्नाव बङ्गाल ऐन्ड नार्थवेस्टर्न रेलवे का स्टेशन है लखनऊ से इस का फ़ासला ३४ मील है और तीसरे दरजे का किराया ।≈)
लगता है॥

बड़ा पिंड।

यह गांओं सूब पंजाब के ज़िला जालन्धर में नार्थवेस्टर्न रेलवे के गुराया स्टेशन से तीन मील के फ़ासले पर वाक़े है फर्वरी के महीने में सखी सरवर साहिब की यादगार में जिन को आम लोग

निगाहे वाला पीर कहते हैं चौकी पीर का बड़ा भारी मेला होता है, २०००० के क़रीब हिन्दू और मुसलमान उस में आते हैं॥

गुरौया स्टेशन से बड़ा पिण्ड को यक्के की सवारी हर वक़्त मिल सकती है। यह स्टेशन लाहौर से १०१ मील है और तीसरे दरजे का किराया १=) है। दिल्ली से २४६ मील और किराया २॥=) है॥

बड़ौदा।

रियासत बड़ौदा की राजधानी है। यहां के महाराजा साहिब को गायकवाड़ कहते हैं। बड़ौदा में देखने के लायक जगह यह है:—नज़र बाग़, महल, मकनपुर महल, सोने चांदी की तोपें। इन के सिवा कई नई इमारतें हैं मसलन कालिज, कचहरी, लेडी डफरन अस्पताल जिन के सबब शहर की खूबसूरती और भी बढ़ गई है। नया राज महल ४५ लाख रुपये के खर्च से तैयार हुआ था। बड़ौदा से अहमदाबाद तक का हिस्सा अंग्रेज़ी सैरगाह की शकल में चला गया है॥

इस जगह हिन्दुओं के मन्दिर बहुत हैं जिन में से देखने के लायक विट्ठल मंडवी, स्वामी नरायन मंडवी और खंडोबा के हैं। इस शहर के इर्द गिर्द कई अजीब पानी की बौलियां भी हैं जिन में से बाज़ी ४०० साल की पुरानी हैं और कुओं की शकल में पानी तक गेलरीदार कमरों से घिरी हुई हैं बाकियों के गिर्द खुली बारादरी हैं।

बड़ौदा का रांगेलिया महल अर्ज़ी देने पर देखा जा सकता है। जवाहरात जो महाराजा साहिब दरबारी मौक़ों पर पहनते हैं बड़े कीमती हैं इन में से एक ५०० हीरों का कंठा है जिस के हीरे बहुत बड़े २ हैं मोतियों का गलीचा जो १० फ़ोट लम्बा और ६ फ़ोट चौड़ा है बिलकुल मोतियों का है तीन साल में ३० लाख रुपये की लागत से बना था॥

बड़ौदे के महाराजा साहिब को कुश्ती का बहुत शौक है, पहलवान दूर दूर से आकर यहां नौकरी करते हैं ॥

स्टेशन पर वेटिंगरूम है और डेढ़ मील पर एक डाक बँगला है शहर में कई धर्मशालायें हैं। सवारी मिलती है ॥

बम्बई से बड़ौदा २४८ मील है और तीसरे दरजे का किराया २॥-) दिल्ली से ६०२ मील और किराया ४॥) है ॥

बकेश्वर या काना ।

बंगाल में एक छोटा सा दरिया है जो बीर भूम जिले से निकलता है इस नदी में गन्धकवाले गर्म पानी के स्रोते हैं। तंतिफसारा गांव से एक मील दक्खिन की तरफ गरम पानी के स्रोतों का एक कुंड है जिस को भूम बकेश्वर कहते हैं यहां हर साल बहुत लोग यात्रा के वास्ते आते हैं इन्हीं लोगों ने महादेवजी के ३०० से भी ज़ियादा मन्दिर बना दिये हैं ॥

बगेश्वर ।

ज़िला कुमाऊं सूबाजात आगरा और अवध में एक कसबा है। अलमोडे से २७ और कलकत्ते से ६११ मील है वस्त एशिया से इस रस्ते बड़ा ब्योपार होता है तिब्बत के साथ भी ब्योपार यहां से होता है। जनवरी के महीने में एक बड़ाभारी मेला होता है उन दिनों में छोटे पहाड़ों की पैदावार का बड़े पहाड़ों की पैदावार के साथ लेन देन होता है। मेले में १० हज़ार से २५ हज़ार तक लोग आते हैं ॥

बगेश्वर रुहेलखण्ड कुमाऊं रेलवे के काठगोदाम रेलवे स्टेशन से ६२ मील है और काठगोदाम स्टेशन बरेली जंकशन से ६६ मील

है। बरेली से काठगोदाम तक तीसरे दरजे का किराया १॥) लगता है। काठगोदाम में टट्टू, कुली और गाड़ियां किराये पर मिलती हैं कुली की मज़दूरी।) पड़ाओ, बोझे के टट्टू का किराया ॥) और सवारी के टट्टू का २) पड़ाओ लगता है॥

अलमोड़े, बगेश्वर और सब पड़ाओं पर डाक बंगले हैं। बगेश्वर में धर्मशाला भी है॥

बटेश्वर।

एक पुराना गाओं जमना दरिया के दाहिन किनारे पर आगरे से ४१ मील और बाह से जो बाह तहसील का सदरमुकाम है और जिसमें बटेसर वाके है ६ मील है बटेश्वर उस सड़क पर है जो आगरे से इटावे को जाती है॥

बटेसर के पुराने हालात ठीक ठीक मालूम नहीं पर ख़ियाल किया जाता है कि इसका नाम बटेश्वरनाथ से जो शिव जी का एक नाम है और जिस के माने बड़ के दरख़्त का सरदार निकला है कहते हैं कि पहले यहां एक शहर सूरजपुर आबाद था और जैनी इस जगह को अब तक इसी नाम से पुकारते हैं भदावड के राजा बदनसिंह के ज़माने से जो सतरहवीं सदी में हुआ है वह नगर बढ़ना शुरू हुआ। राजा बदनसिंह ने १६४६ में महादेवजी का मन्दिर बटेश्वरनाथ बनाया। बटेश्वर का मेला जो कार्तिक की १५ तारीख़ के करीब शुरू होकर एक महीना रहता है बहुत मशहूर है। इस में एक लाख यात्री गंगा जी में स्नान करने आते हैं टट्टू, ऊंट, भैंसे, हाथी पशु, गाड़ियां भी बहुत बिकने के वास्ते लाये जाते हैं मेला जमनाजीके रेते पर होता है॥

ईस्ट इंडियन रेलवे का शिकोहाबाद स्टेशन इस जगह से १२ मील है वहां यक्के बटेश्वर जाने के लिये मिलते हैं ॥

बटेश्वर में सराय या धर्मशाला कोई नहीं लोग मैदान में ठैहरते हैं ॥

शिकोहाबाद कलकत्ते से ७५४ मील है तीसरे दरजे का किराया ६॥≈) लगता है ॥

बड़ोच ।

बम्बई बड़ोदा और सैंटरल इण्डिया रेलवे पर गुजरात में एक बड़ा तिजारती शहर है यहां से रूई कसरत से बाहर जाती है और कई कखें भी है बम्बई अहाते में जो बड़ी अच्छी हालत में हैं। तरी के रस्ते भी शहर का बड़ा ब्योहार है जहाज़ कस्टमस बंदर तक याने जहां जहाज़ों से महसूल लिया जाता है सौदागरी के लिये जाते हैं लेकिन रेल के खुलने से अब पानी के रस्ते तिजारत कम होगई है ॥

बड़ोच में देखने के लायक बहुत थोड़े मुक़ाम हैं पर यहां से १० मील ऊपर की तरफ़ नर्बदा दरिया के किनारे पर सकल तीरथ है जिस को हिन्दू लोग बड़ा पवित्र समझते हैं यहां नवम्बर के महीने में बड़ा मेला होता है जो पांच दिन तक रहता है। बहुत लोग यात्रा के वास्ते आते हैं ॥

सकल तीर्थ के पास मशहूर और बड़ा बड़ का दरख़्त कबीर बद है। कहते हैं यह दरख़्त कबीर की दांत कुरेदनी से उगा था और १०००० आदमी उसके नीचे आजाते हैं ॥

स्टेशन के पास एक उमदा धर्मशाल है जिस में अंग्रेज़ों के वास्ते भी कमरे हैं। स्टेशन पर स्वारी मिलती है ॥

बड़ोच बम्बई से २०४ मील है और तीसरे दरजे का किराया २।=) है। देहली से ६४५ मील और किराया ६) है॥

बदनेरा।

जी० आई० पी० रेलवे और अमराओती शाख का जंकशन है यहां से एलिचपुर को नज़दीक सड़क गई है। कुन्दनपुर में जो बदनेरे से १८ मील है नवम्बर और दिसम्बर के बीच में मेला होता है यह मेला एक महीना रहता है और ६०००० के क़रीब लोग उसमें जमा होते हैं। उन ही दिनों में बदनेरे से ६ मील भिट्ठा में वैसा ही मेला होता है और ऊम्बरवदा में माल मण्डी का मेला एक महीने तक लगता है इन मौक़ों पर ताम्बे और पीतल के बर्तन, देसी कपड़ा, लोहे की चीज़ें खिलौने बहुत बिकते हैं बदनेरे में ८ मील गनूजा और तुलाम्बा में भी दिसम्बर और फ़रवरी में मेले होते हैं॥

बदनेरा बम्बई से ४१३ मील और सवारी गाड़ी में तीसरे दरजे का किराया ४।-) है। अमराओती स्टेशन यहां से ६ मील है॥

बदरीनाथ।

ज़िला गढ़वाल सूबाजात आगरा और अवध में हिमाल्या पर्वत की चोटी का नाम है। समुद्र से २३२१० फ़ीट ऊंचा है। उत्तर देश के लोगों के लिये सब से नज़दीक रेलवे स्टेशन हरीद्वार है जो अवध रुहेलखण्ड रेलवे की हरिद्वार देहरा शाख पर वाक़े है हिन्दुस्तान के और हिस्सों के यात्रियों के लिये काठ गोदाम रुहेलखंड कमाऊं रेलवे पर सब से नज़दीक स्टेशन है। बदरीनाथ इन दोनों स्टेशन से पैदल या झम्पानों में पहुंच सकते हैं इस की एक चोटी

पर श्रीनगर से ५६ मील उत्तर पूर्व्व की तरफ़ विष्णु का मन्दिर है जिसको बदरीनाथ भी कहते हैं ८०० साल हुए यह मन्दिर शंकर स्वामी ने बनाया था जिस ने देवता की मूर्ति को दस बार दरया में गोता मार कर निकाला था हिन्दू लोग इस मन्दिर को बड़ा पवित्र मानते हैं और यात्रा के लिये आते हैं मन्दिर के नीचे पहाड़ की तरफ एक पवित्र तालाब है जिस में पानी गरम और एक टूटी वाले सोते से नालियों के रास्ते से आता है हर साल पचास हज़ार के क़रीब यात्री आते हैं और उस पवित्र तालाब में स्नान करते हैं देवता की मूर्ति को हर रोज़ सोने चांदी के बर्तनों में भोजन दियाजाता है। और बहुत से सेवक उसकी सेवा में लगे रहते हैं यहां का बड़ा पुजारी जिसको रावल कहते हैं हमेशा क़ुत मालाबारसूबा दक्खिन का ब्राह्मण होता है। यात्रियों के लिये धर्मशाला बनी हुई हैं॥

बनावार।

सदने मरहट्टा रेलवे पर एक स्टेशन है यहां से सड़क हलेबिद और बेलूर को जाती है हलेबिद को पुराने ज़माने में दोरासमुद्रा कहते थे और यह होयसाला बलाला वंश के राजों की राजधानी थी अब भी इस में अजीब हिन्दू मन्दिरों के खंडर हैं। इन में से बड़ा होयशालिवेश्वाडा का मन्दिर ग्यारहवीं सदी में शुरू हुआ था पर कभी पूरा नहीं हुआ। फरगुस्सन साहिब जो इमारत के काम में सनद माने जाते हैं लिखते हैं कि अगर यह मन्दिर पूरा हो जाता तो हिन्दू लोगों को जितना गर्व होता ठीक था। गाथिक इमारतों में कोई भी ऐसा खूबसूरत नहीं इसी ढंग के वास्ते दरमियानी ज़माने के लोग कोशिश करते थे पर कभी पूरे २ कामयाब नहीं हुये। आगे वह कहते हैं

कि केदारेश्वाडा मन्दिर और भी खूबसूरती में बढ़कर है और शायदही कोई ऐसी और इमारत हो लेकिन अब यह टूटी फूटी हालत में है जैनियों के मन्दिर भी जिन में काले रोगन के चमकतेहुए पीलपाये हैं देखने के लायक हैं। गर्ज़ जो उन्हों ने लिखा है पढ़ने के काबिल है॥

बेलूर में चलूकयां तरज़ का चन्नाकेश्वा का मन्दिर भी बड़ा खूबसूरत है। इस को बारहवीं सदी में होएसाला वंश के राजा विष्णु वर्धना ने बनाया था लेकिन मुसलमानों के हमले के वक्त इस को नुकसान पहुंचा था और इसकी बुर्जी फिर बनाई गई थी इस में बड़ी अजीब संगत्राशी की हुई है हर डेवढ़ी के बाहर जो मेहनत की गई है फरगुस्सन साहब कहते हैं जगत् में किसी मकान के उतने हिस्से पर नहीं की गई होगी॥

बेलूर इस रेलवे स्टेशन से २६ मील है और बैलगाड़ियों के लिये वहां तक अच्छी सड़क जाती है गाड़ियां स्टेशन मास्टर की मारफत ३) गाड़ी के हिसाब से मिल सकती हैं॥

बनावार पूना से ४१३ मील है तीसरे दरजे का किराया सवारी गाड़ी में ४।-)॥ और डाकगाड़ी में ६॥=) है॥

बनावार में बंगला और धर्मशाला है और स्टेशन पर भी एक धर्मशाला है॥

बनारस या काशी।

अवध रुहेलखण्ड और बंगाल नार्थ वेस्टर्न रेलों का जंकशन है और गंगा जी के उत्तर के किनारे पर बसा हुआ है। इस का फ़ासला कलकत्ते से ४२६ मील, बम्बई से इलाहाबाद के रस्ते ६३८ मील और मद्रास से १४४० मील है। हिन्दुओं के लिये पृथ्वी पर बनारस से बढ़कर पवित्र और कोई जगह नहीं। कहते हैं कि यह नगर भूमि पर नहीं बना था बल्कि शिवजी के त्रिशूल



Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.

बनारस के और मन्दिर।



Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.

मरघट—बनारस ।

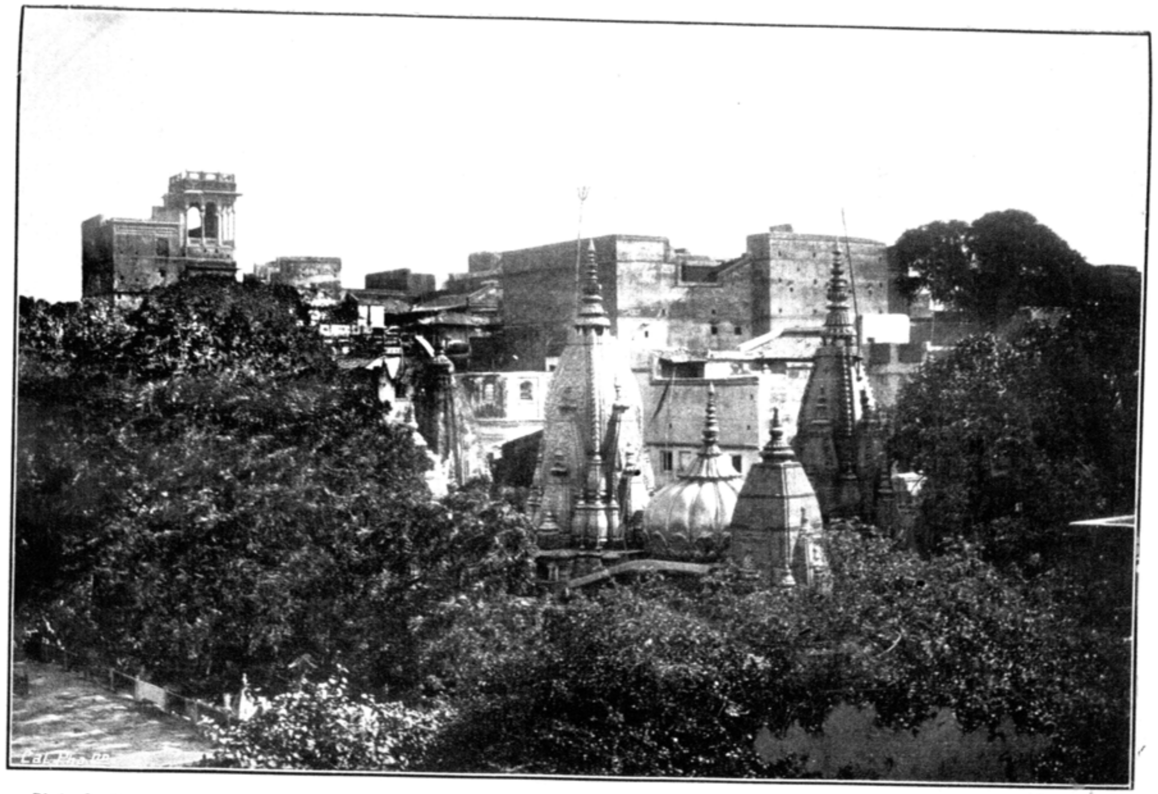


Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.

विश्वेश्वर नाथ का मन्दिर—बनारस।

पर बना था और पहले युग में सोने का था पर कलियुग में मिट्टी और पत्थर का बन गया गंगा जो निकास से आखिर तक पवित्र मानी जाती है पर काशी के पास बहुत ही पवित्र समझी जाती है। जो लोग पांच कोशी या शहर के आस पास पांच कोस के अंदर मरते हैं उन्होंने कितने ही पाप किये हों सीधे स्वर्ग को जाते हैं॥

बनारस में अनगिनत मन्दिर हैं उन में से विशेश्वर, भैरव नाथ और दुर्गा के मन्दिर बहुत नामी हैं। विशेश्वर का मन्दिर शिवजी का मन्दिर है और काशी के सब मन्दिरों से जियादा पवित्र समझा जाता है। यह मान मन्दिर आकाश लोचन से थोड़ी दूर है इसमें एक लिंग है। विशेश्वर देवता काशी का धर्म्मउपदेशक है और भैरवनाथ जिसका मन्दिर विशेश्वरनाथ के मन्दिर से कुछ फासले पर है उस का परम मन्त्री है बनारस के लोग और सब यात्री विशेश्वर के मन्दिर में आकर पूजा करते हैं इस मन्दिर को अंग्रेज़ लोग सुनहरी मन्दिर कहते हैं क्योंकि इस के गुम्बद और कलश पर सुनहरी पत्रा चढ़ा हुआ है। अन्नपूर्णा का मन्दिर विशेश्वर के मन्दिर के साम्हने है और यहां यात्री बहुत आते हैं दुर्गा का मन्दिर और उस का सुन्दर ताल काशी के दक्खिनी किनारे में वाके हैं॥

मन्दिरों के सिवाय काशी में बहुत से घाट, ताल और कुएं हैं बड़े घाट पांच हैं --

(१) असी संगम जहां असी गंगा जी के साथ शहर के दक्खिन की तरफ मिलती है॥

(२) दशास्वमेध, कहते हैं कि शिवजी के कहने से ब्रह्मा ने इस जगह अश्वमेध किया था और इसी सबब से घाट का यह नाम हो गया है॥

(३) मनीकर्ण का घाट, यहां मरे हुये लोग जलाये जाते हैं॥

(४) पांच गंगाघाट, हिन्दुओं का ख्याल है कि यहां पांच पवित्रदरया धौतपपा, अरनन्दा, कीरनन्दी, सरस्वती और गंगाजी यहांमिलती है॥

(५) बर्ना संगम, यहां बर्ना और गंगा जी मीलते हैं।

बाकी घाटों में से केदारनाथ, नानपुर के राजा का घाट और सिन्धिया का घाट देखने के लायक हैं॥

काशी में पवित्र ताल यह है :—

(१), मनिकर्निका, इसी नाम के घाट के पास है। हर एक यात्री को यहां स्नान करना होता है॥

(२) पिशाच मोचन, काशी के सब लोग साल में एकदफा भूत प्रेतों से बचने के लिये इस ताल में स्नान करते हैं॥

(३) और अगस्त्य का कुण्ड हैं॥

काशी के कूएं यह हैं :—

(१) गयाणकुप जो औरगज़ेब की मसजिद और विशेश्वर नाथ के मन्दिर के बीच में है कहते हैं कि इस में शिवजी रहते हैं॥

(२) अमृत कुण्ड, कहते हैं कि इस के पानी से स्नान करने से कोढ और शरीर के और रोग दूर हो जाते हैं॥

(३) नाग कुण्ड यह कुंआ सब से पुराना है और जिस मुहल्ले में यह कुंआ है उस का नाम भी इसी के नाम पर है इस जगह हर साल एक मेला होता है उस मौके पर लोग सर्प के काटे से बचने के लिये इस कुएं के पानी से स्नान करते हैं॥

बनारस में और बहुत से मकान देखने के लायक हैं उन में से बड़े बड़े यह हैं :—

(१) प्रेन्स आफवेल्ज़ का हस्पताल जो उस सड़क पर है जो छावनी से राजघाट को जाती है॥

(२) टाऊन हाल जिस को महाराजा विजियानगराम ने अपने खर्च से बनवाया है ॥

(३) गवर्नमेन्ट और हिन्दू कालिज ॥

(४) राजा कालीशंकर का अन्धे और कोढ़ियों के लिये शरण स्थान जिस के खर्च के लिये राजा कालीशंकर रुपया छोड़ मरे हैं और कुछ सरकार से मिलता है ॥

(५) पागलखाना ॥

(६) सेन्टरल और डिस्टरिक्ट जेल ॥

(७) कमिश्नर और कलक्टर के दफ़्तर और कचहरीयां ॥

(८) लण्डन मिशन इन्स्टीट्यूट ॥

अज़मत गढ़ के रईस बाबू मोतीचन्द ने अंग्रेज़ों के घाट देखने के वास्ते एक सुन्दर किश्ती बनाई हुई है इसके वास्ते २४ घण्टे पहले खबर देनी चाहिये ॥

छावनी नगर से ३ मील है और वहां अंग्रेजी और देशी पलटनें रहती हैं ॥

बनारस में दो अंग्रेज़ों के होटल हैं और काशी स्टेशन के पास एक धर्मशाला है। नगर में बहुत धर्मशालाएं हैं ॥

काशी स्टेशन पर यक्के और छावनी के स्टेशन पर गाड़ियां सवारी के लिये किराया पर मिलती हैं ॥

काशी मुगल सराय से ७ मील और कलकत्ते से ४२६ मील है तीसरे दरजे का किराया ~)॥ और ४।~)॥ लगता है। सहारन पुर से फ़ासला ५१३ मील किराया ४॥~)॥ है ॥

बम्बई।

हिन्दुस्तान में सब से बड़ा बन्दर और बम्बई अहाते के लाट साहब का सदर है ॥

१६६१ में शहर बम्बई पुर्तगाल मुल्क के बादशाह ने इंगलिस्तान के बादशाह चार्लस दोयम को उसकी मलका कैद्रीन आफ बरीगंजा के दहेज में दिया था पर मालूम होता है कि बादशाह चार्लस को यह दूर के जागीर फायदेमन्द न मालूम हुई क्योंकि १६६८ में उसने इस को १० पाउण्ड सालाना पर ईस्ट इन्डिया कम्पनी को दे दिया। १७७३ में बम्बई गवर्नर जनरल के मातहत हो गया और उस वक्त से यह अहाता बनगया है। मरहट्टों की पहिली लड़ाई के बाद जो १७७४ - १७८२ में हुई और और बहुत सी गरदिश के बाद बम्बई पूरे तौर पर अंग्रेजों के कबजे में आगई॥

बम्बई जजीरों के एक झुण्ड पर वाके है जो जजीरा नुमा की शकल में है। इसका खूबसूरत नज़ारा और तिजारत के लिये अच्छे मौके पर होने के सबब एशिया के सब शहरों से बढ़कर है बंदर शहर के पुर्बी किनारे फैलाहुआ है और उसपर बेशुमार देशी किशतियां बड़ी खूबसुरत मालूम होती हैं बंदर जहाजों और अगन बोटों के लिये बेजोखों जगह है। शहर के इधर के हिस्से में आबादी बड़ी घनी है॥

बम्बई के पास एलिफन्टा की खोहों के मन्दिर देखने के लायक हैं जो टकसाल के पास मजागाओं या अपालो बन्दर से जहाज में एक घण्टे का रास्ता है। बसीन में पुर्तगाल वालों के पुराने किलों के खंडर देखने के लायक हैं दरिया के रस्ते आने से बसीन का सफ़र बड़ा भला मालूम होता है और अगर आते हुए रास्ता बदलना मंज़ूर हो तो बम्बई बड़ौदा और सैंटरल इन्डिया रेलवे में बसीन रोड़ स्टेशन से सवार होकर बम्बई आसक्ते हैं कनेरी की खोहें जो झील तुलसी से तीन मील और बड़ी सुन्दरी है वहां आसानी से पहुंच सकते हैं बेहरा और तुलसी झीलें जिन से बम्बई में पानी आता है पहाड़ी के नीचे बड़ी सुहावनी जगह में करीब दो घंटे के रास्ते पर वाके हैं॥

खास बम्बई में नीचे लिखी हुई जगह देखने के लायक़ हैं :—

(१) नेचरल हिस्टरीसोसायटी याने चीज़ों की खासियतें जानने वालों की सोसायटी का अजायब घर।

(२) प्रोंग का लायट हाऊस याने मुनारा जिस पर जहाज़ों को रसता दिखाने के वासते रौशनी की जाती है देखने के लिये टिकट बंदरगाह के अफ़सर से मिलते हैं।

(३) कलाबे का गिरजा जो उन लोगों की यादगार में बनाया गया था जो अफ़ग़ानिस्तान की पहली लड़ाई में मारे गये थे, दिन निकलने से शाम तक खुला रहता है।

(४) एलफिनस्टोन सर्कल में रायल ऐशियाटिक सोसायटी को बम्बई शाख का किताब घर और अजायब खाना ६ बजे सवेरे से साढ़े छे बजे शाम तक खुला रहता है, किसी मेम्बर को सिफ़ारिश से देख सक्ते हैं।

(५) एलफ़िनस्टोन सर्कल में टाऊन हाल के पास शाह टकसाल रोज़ खुलता है टकसाल के अफ़सर की इजाज़त से देख सक्ते हैं।

(६) चर्च गेट स्टरीट में सेंट टामस का गिर्जा, बार्ग मास्टरी के दफ़तर का बाड़ डाकखाना।

(७) फ़ोर्ट में एलफ़िस्टन बाग़।

(८) एसपलेनेड में क्राफोरड मारकिट।

(९) गवनर्मिंट डाक यार्ड याने जहाज़ गोदाम और कारखाने अपाली स्टरीट में सोमवार और बृहस्पत को अफ़सर से दरखास्त करने पर देख सकते है।

(१०) एसप्लेनडे रोड में तार घर।

(११) मयो रोड पर सरकारी दफ़तर और हाईकोर्ट।

(१२) एसपलेनेड में बोहिन का बनाया हुआ बादशाह का बुत।

(१३) एसप्लेनेड रोड पर राजा बाई का यूनीवर्सिटी मुनारा और किताब घर सैसून मिकैनिक इन्स्टीटियूट, सरकावस जी का यूनिवर्सिटी हाल।

(१४) जी० आई० पी० रेलवे का विक्टोरिया टरमिनस स्टेशन हार्नबी रोड पर।

(१५) चर्च गेट स्टरीट में बी० बी० और सी आई रेलवे के दफ़तर।

(१६) विकटोरिया टरमिनस स्टेशन के सामने म्यूनिसिपल कमेटी का दफ़तर।

(१७) मुलेश्वर में जानवरों का हसपताल।

(१८) ग्रांट मैडिकल कालेज और जेमसट जी जी जी भाए का हसपताल, ग्रांट मडिकल कालिज के अफ़सर की इजाज़त से देख सकते हैं।

(१९) पारल और बारली में रूई कातने की कलें।

(२०) प्रिन्स और विक्टोरिया डॉक्स याने घाट, फ़रीर रोड पर।

(२१) चौपती में बुध का मनारा, पारसी पनचायत के सेक्रेटरी से देखने के लिये टिकट मिलते हैं।

(२२) मालावार पहाडी का हौज़।

पारल भी देखने वाली जगह है वहां बम्बई बड़ौदा और सेंटर्ल इण्डिया और जी० आई० पी रेलों के इंजनों के कारखाने हैं।

बम्बई में रूई के बड़े कारखाने हैं और यहां की आबहवा अच्छी है गर्म महीनों में भी यहां ज़ियादा गरमी नहीं होती॥

बम्बई में हिन्दुस्तान की बड़ी बड़ी रेलें मिलती हैं जी०

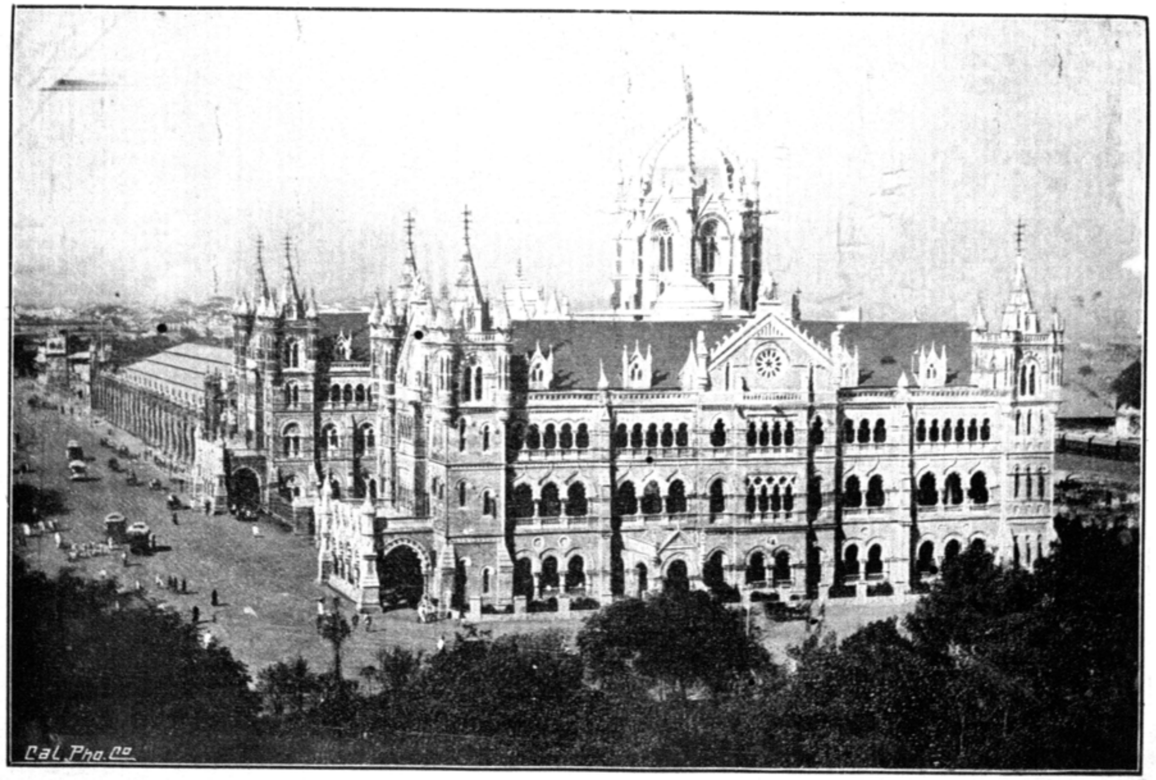


Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.

विक्टोरिया टरमिनस स्टेशन—जी० आई० पी० रेलवे—बम्बई।

मथुरा जी० आई० पी० रेलवे पर बम्बई से ८६८ मील और दिल्ली से ८६ मील है तीसरे दरजे का किराया डाकगाड़ी में १०॥≈) और १।~) हैं और सवारी गाड़ी में ६~) और १।) लगता है॥

बल्लबपुर।

बंगाल अहाते के ज़िला हुगली में सिरामपुर के गिर्दनवाहका नाम है यहां और पास के गांव महेश में जगन्नाथ देवता के दो मेले बड़ी धूम धाम से होते हैं जिन में अनगिनत लोग आते हैं। पहले मेले का नाम स्नान यात्रा है, यह मेला मई के महीने में होता है और एक दिन रहता है दूसरा मेला जो रथयात्रा कहलाता है पहले मेले के ६ हफ़्ते बाद होता है। देवता को महेश के मन्दिर से निकाल कर एक रथ में रखते हैं और बल्लब पुर को जो महेश से एक मील के फासले पर हैं खैंच कर लाते हैं देवता यहां राधा बल्लभ के मन्दिर में ८ दिन रहता है जिस से उस को फिर रथ में बिठाकर अपने मन्दिर में ले आते हैं। इस मौके पर महेश में मेला होता है जो ८ दिन रहता है पहले और आठवें दिन यात्रा की रसमें की जाती हैं और बाकी दिनों में ब्योपार होता है। पहले और आठवें दिन एक लाख के करीब लोग जमा होते हैं॥

सिरामपुर हौड़े से १२ मील है और तीसरे दरजे का किराया ढाइ आने है॥

बलिया।

अहाता बंगाल के ज़िला दीनाजपुर में एक नगर है यहां एक बड़ा मशहूर मेला अलावाखावा कृष्ण जीका यादगार में हर साल अक्तूबर या नवम्बर के महीने में रासपूर्णिमा तेहवार के मौके पर होता है। देवता को सूखे चावल चढ़ाकर पूजा की जाती है और

इसी सबब से इस मेले का नाम अलाराखाया याने सूखे चावल खाना हो गया है यह मेला ८ दिन से १५ दिन तक रहता है और ७५ या ८० हज़ार के क़रीब लोग इस में जमा होते हैं। मेले के मौक़े पर बड़ा ब्योपार होता हैं॥

बलिया ईस्टर्न बङ्गाल रेलवे के हलदी बाड़ी स्टेशन से ३० मील है, हलदी बाड़ी में बैल गाड़ियां बलिया जाने के लिये मिलती हैं। गांव में कोई सराय या धर्मशाला नहीं लोगों को ठहरने की जगह का आप बन्दोबस्त करना पड़ता है॥

कलकत्ते से हलदी बाड़ी २६२ मील है तीसरे दरजे का किराया ३॥।) लगता हैं॥

बलीघटयम।

या बलीघटम मद्रास अहाते के विजागापटम ज़िले में गांव है। यहां शिवजी का जिन को ब्रह्मेश्वारादू कहते हैं मन्दिर है जो बहुत पवित्र माना जाता है इस मन्दिर में अनूठी बात यह है कि स्वामी या मूर्ती का मुंह पश्चिम को है। दरिया पेंदेरु या वहीनादू जो पहाड़ी के नीचे जिस पर मन्दिर खड़ा है बहता है थोड़ी दूर तक दक्खिन से उत्तर की तरफ़ उलटा चलता है। इस को हिन्दू लोग बड़ा सुभ समझते हैं और मन्दिर की जिस का नाम उत्तर वाहिनी है बहुत पवित्र मानते हैं।

दर्या के किनारे थोड़ी सी जगह में एक क़िस्म का टूटा पत्थर है जिस की शकल राख से मिलती है। पुजारी लोग कहते हैं कि यहां बली चक्रावर्ती ने यज्ञ किया था॥

मद्रास रेलवे की नार्थ ईस्ट लाइन का नरसापटनाम स्टेशन यहां से २३ मील है वहां पर बलीघटयम जाने के लिये बैल गाड़ियां

मिल सक्ती हैं नरसापटनाम रायापुरम मद्रास से ४३६ मील है तीसरे दरजे का किराया ४॥।) लगता है ॥

बलीघटयम में कोइ सराये या धर्म्मशाला नहीं ॥

बसाराकोडू ।

एक छोटा सा गावं और मद्रास रेलवे के स्टेशन अदौनी से ६ मील पर वाक़े है। इस गावं में और उस के आस पास बहुत से मन्दिर हैं पर इस तालुक़ में सब से बड़ा नामी मन्दिर गावं से थोड़े फ़ासले पर दक्खिण पूर्व की तरफ़ एक खोह में है। हर साल चैत्र महीने का पहिली तारीख़ को यहां पूजा की जाती है जब हनूमान की मूर्ति गाव के एक छोटे मन्दिर से यहां लाई जाती है कहते हैं कि अगर पहले वर्षा न हो तो इस पूजा के बाद ज़रूर वर्षा होती है सोमेश्वाड़ा का मन्दिर इस गावं से एक मील के क़रीब है ॥

अदौनी मद्रास से ३०८ मील है तीसरे दरजे का किराया सवारी गाड़ी में ३।) और डाक गाड़ी में ४) लगता है ॥

बसीम ।

बरार में एक नगर और ज़िला बसीन का सदर है। जी० आई० पी रेलवे के अकोला स्टेशन से ५२ मील है। अकोला से बसीम के रास्ते हिंगौल छावनी को तांगे जाते हैं उन में जगह मिल सक्ती है ॥

बसीम बड़ा पुराना नगर है कहते हैं कि बच्छ ऋषि ने बासाया था और इस का असली नाम उस ऋषि के नाम पर बच्छ गुल्मिन था क़सबे के बाहर एक तालाब है जो पद्मा तीर्थ कहलाता है। कहते हैं कि राजा वासुजी का कोढ़ यहां नहाने से अच्छा हो

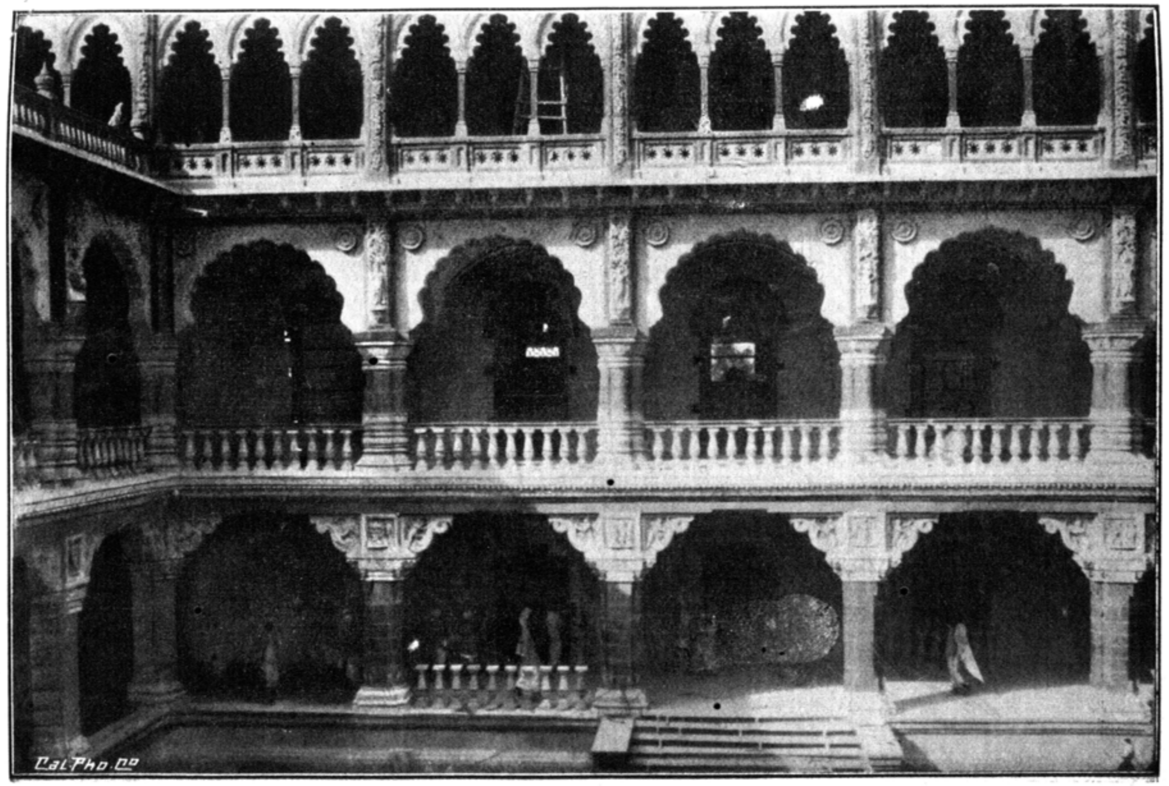
गया था अब भी हज़ारों लोग इस में नहाते हैं तालाब में जो चीज़ पड़ जाती है पत्थर बन जाती है ॥

बालाजी का मन्दिर और तालाब बहुत खूबसूरत हैं इन को भोंसला राजों के एक जनरैल भवान काली ने बसाया था ॥

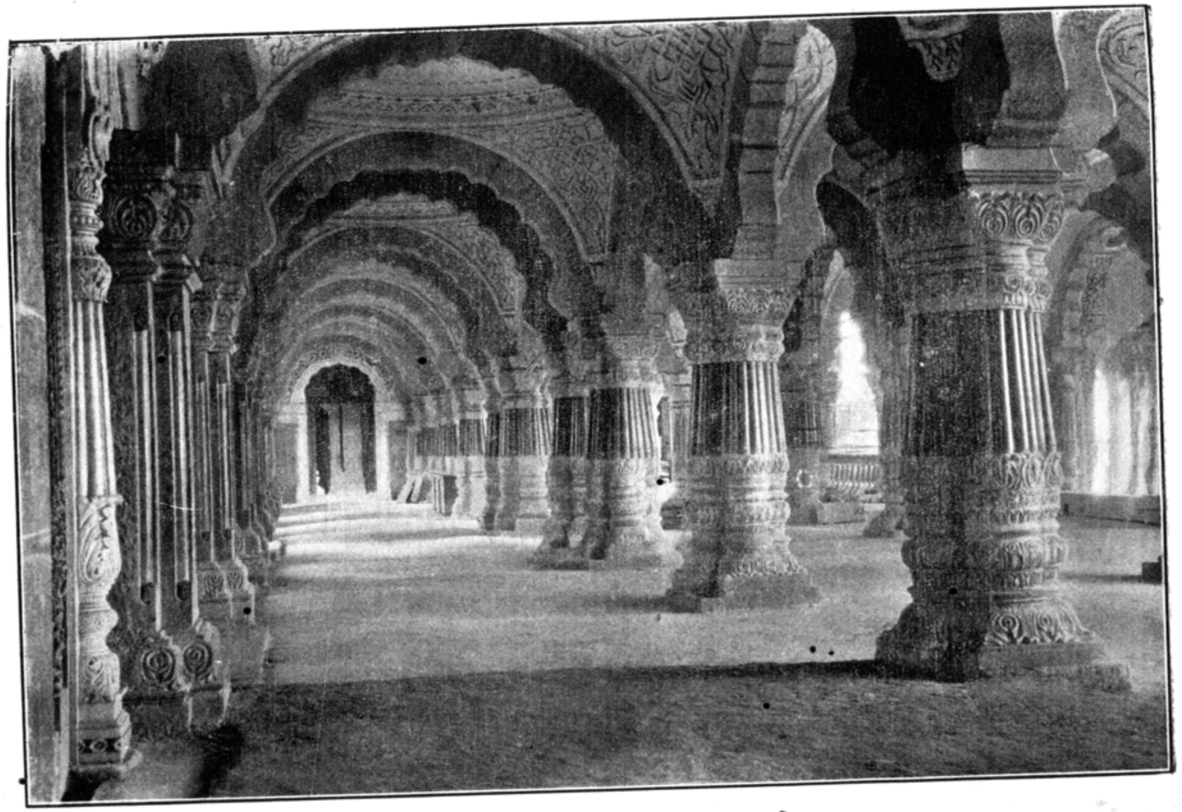
अकोला बम्बई से नागपुर लाईन पर है, बम्बई से ३६३ मील है और तीसरे दरजे का किराया ४ℳ लगता है ॥

बसतर ।

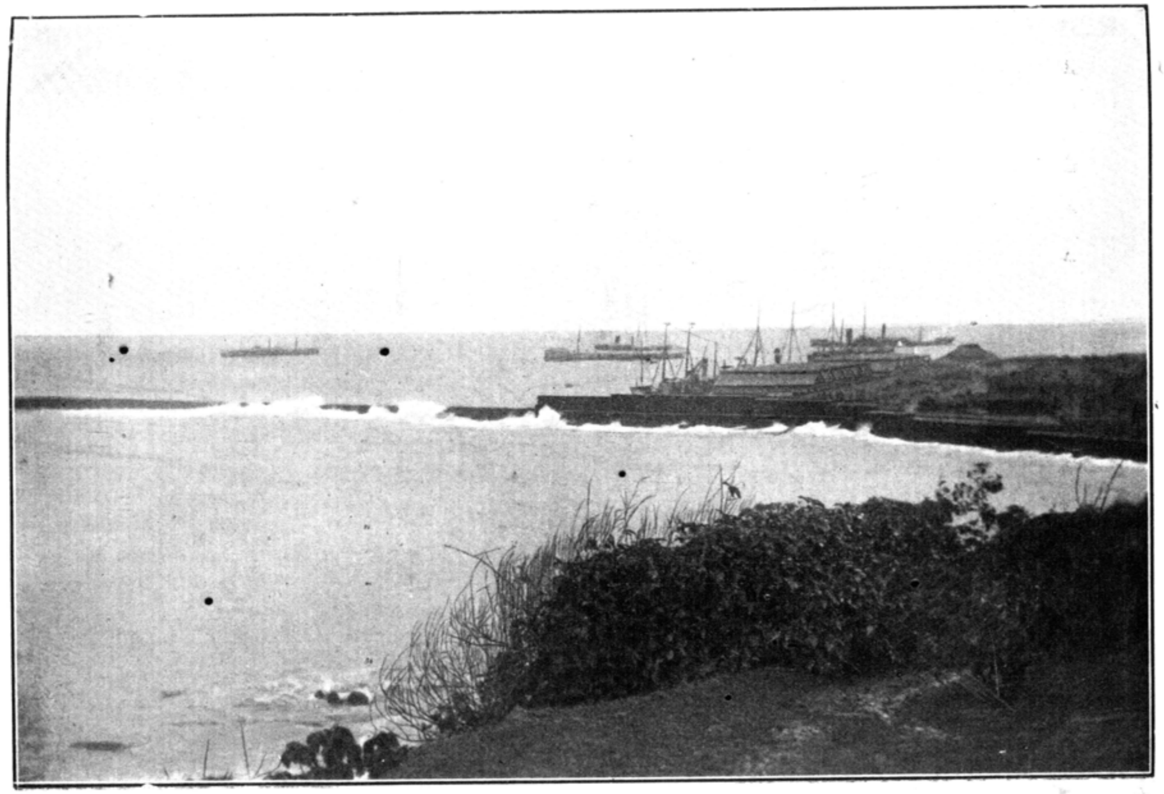
सूबाजात मुतवस्त के चन्दा ज़िला में बाजगुज़ार रियासत है राजा साहब जगदलपुर में जो रियासत का बड़ा नगर है रहते हैं सारी रियासत में दन्तेश्वरी या माँली जिस को भवानी या काली से शनाख्त करते हैं और माता देवी की सब लोग पूजा करते हैं बड़ी जातों के लोग और देवताओं को भी मानते हैं लेकिन दन्तेश्वरी यहां के राजाओं की सरप्रस्तदेवी समझी जाती है । उसी देवी की सरप्रस्ती में यहांका राज बंश हिन्दुस्तान छोड़कर वरंगल में आ बसा था और जब मुसलमानों ने उन्हें तेलिंगानाको रियासत से निकाल दिया तो देवी उनको दन्तीवाड़े में लेगई और अपना बासा भी वहीं बना लिया उसका मन्दिर संखनी और डंकनी दरियाओं के संगमके पास है और मैथली पुजारी इस के अहाते में रहता है कहते हैं कि किसी जमाने में यहां भेरियाह या आदमी भेंट किये जाते थे और इसी सबब से सरकार ने १८४२ के बाद कई साल तक मन्दिर पर पहरा रक्खा.आजकल बहुत से राह गीर जब मन्दिर के पास से गुजरते हैं तो देवीको बकरा चढ़ाते हैं और बाजे देवी की मूर्ति के सिर पर फूल रखकर शगून भी लेते हैं अगर फूल दाहिनी तरफ गिरता है तो अच्छा शगून समझा जाता है नहीं तो खराब । मूर्ति काले पत्थर की बनी हुई है । और अक्सर उसको सफ़ेद मलमल की साड़ी और जेवर पहनाये होते हैं ॥



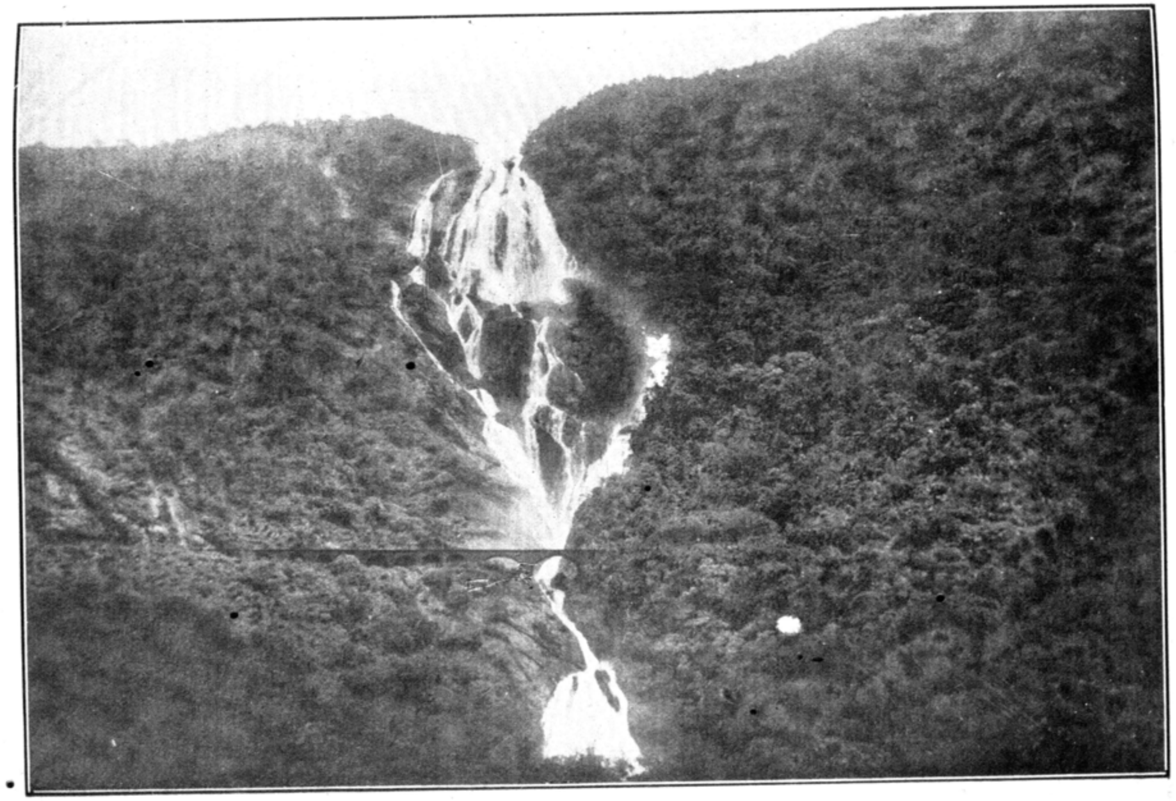
महाराजा साहेब मैसूर का महल अन्दर से ।



महाराजा साहिब मैसूर का नया महल अन्दर से।



मारमुगाओ बन्दर।



दूध सागर झरना।

राक से ८॥ मील है देखने के लायक है। मारमुगाओं में अंग्रेजों के लिये एक बहुत अच्छा होटल है। मारमुगाओं से ७ मील पर पंजिम है जो हिंदुस्तान में पुर्तगाल देशवालो की राजधानी है और १० मील के फासले पर पुराना गवा नगर है। यह दोनों नगर देखने के लायक हैं पहले में चौक, सुन्दर सैर के बाग और अंग्रेजी बाजा बजने की जगह है और पुराने गवा में कई सुन्दर गिरजे हैं। सेंटफ्रांसास जेवायर साहिब जो पूर्व में बड़े पादरी हुये हैं और जिन को गवा के लोग ऋषि मानते हैं सैंटबाम गिरजे में दफ़न हैं उन की लोथ चांदी के तावूत में रक्खी हैं।

पंजिम से गवा तक नजारा बड़ा सुहावना है और मारमुगाओं के होटल के मैनेजर की मारफत बंदर से पार जाने के लिये किश्ती और दूसरी तरफ गाड़ी मिल सक्ती है।

मारमुगाओं पूना से ३६३ मील है तीसरे दरजे का किराया ४) रुपया लगता है॥

मदरास।

मदरास अहाते का सदर मुकाम और सब से बड़ा नगर है इस जगह हाई कोर्ट और बहुत से सिबिल और फौजी महकमें हैं। आब हवा भी अच्छी है और यह इतिहासी नगर है॥

यहां देखने के लायक यह जगह हैं॥

(१) दस्तकारी का स्कूल (२) अजायब घर (३) तोपों का कारखाना (४) सकाच चर्च याने सकाट लैंड देश के इसाइयों का गिरजा (५) पीपल्स पार्क (६) विकटोरिया मेमोरियल हाल (७)लार्ड मिनटो लार्ड कारनिवालिस और जनरल नील साहिब के बुत्त (८) नैपियर पार्क (९) हाईकोर्ट (१०) ला कालज (११) सैंट जार्जकिला जिस में गोला बारूद का कारखाना भी है इस किले में दो तोपें रक्खी हैं जो सुलतान टीपू से लड़ाई में हाथ आई थी (१२) नवाब

कर्नाटिक का महल जो किले से थोड़ी दूर है (१३) आकाश लोचन और गवर्नमेन्ट हाउस ॥

मदरास रेलवे और साउथ इण्डियन रेलवे के यहां छै छै स्टेशन हैं और यहां देशियों के लिये कई आश्रम हैं जिन में से राजा सर रामस्वामी मुडेलियर की चौलत्री मदरास रेलवे के सेंटरल स्टेशन और सऊथ इण्डियन रेलवे के पार्क स्टेशन के पास हैं ॥

मदरास के सब स्टेशनों पर घोड़ा गाड़ियां किराये पर मिलती हैं॥

मदरास बम्बई से ७९४ मील और नागपुर के रस्ते कलकत्ते से १०३२ मील है तीसर दरजे का किराया डाकगाड़ी में ११।) रु० और १३।=) लगता है ॥

येवट ।

जी० आई० पी० रेलवे पर स्टेशन है। श्रावण के महीने में हर साल यहां से एक मील के फासले पर एक पहाड़ी में बलेस्वर के मन्दिर पर मेले होते हैं आब पाशी की नहरें पास बहती हैं बैल गाड़ियां इन्तजाम करने से मिलसक्ती हैं ॥

येवट जी० आई० पी० रेलवे की बम्बई राएचूर लाइन पर बम्बई से १४५ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में २) और सवारी गाड़ी में १।) लगता है ॥

रावर ।

जी० आई० पी० रेलवे का स्टेशन है। यहां से ११ मील के फासले पर ईशापुर में ईशादेव का मेला होता है जिस में खानदेश से बहुत लोग आते हैं। स्टेशन के पास एक सराय है ॥

रावर बम्बई से २९८ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ४॥=) और सवारी गाड़ी में ३७ लगता है ॥

रेमुना।

अहाता बंगाल के बालासोर जिले में बालासोर नगर से ५ मील पश्चिम की तरफ एक गांव है। यहां हर साल फरवरी के महीने में श्री चोरा गोपीनाथ कृष्ण जी के एक अवतार की याद गार में मेला होता है जो १३ दिन तक रहता है, १० से १२ हजार तक लोग इस मेले में आते हैं। फरवरी, अप्रैल और नवम्बर के महीनों में लोग मन्दिर के दर्शन को बहुत आते हैं॥

बालासोर बङ्गाल नागपुर रेलवे में कलकत्ते से १४४ मील है तीसरे दरजे का किराया १॥=) लगता है। बालासोर में घोड़ा, गाड़ियां सवारी के लिये किराये पर मिलती हैं॥

रेनीगुंटा।

मदरास रेलवे और साऊथ इण्डियन रेलवे का यहां जंकशन है। स्टेशन के बाहरही अंग्रेजों और देशियों के लिये खाने और टिकने की जगह बनी हुई हैं। चन्द्रगिरी में तलेगू राजों का बनाया हुआ राज महल यहां से १४ मील है वहां तक बैल गाडियां आसानी से आजा सकती हैं। यह महल पत्थर का बना हुआ है लकड़ी इसमें नहीं लगी और देखने के लायक है इस के पास रामा महल है जो पहले महल से छोटा है यह दोनों महल चन्द्रगिरी पहाड़ी की जड़ में बने हुए हैं और पहाड़ी की चोटी पर बिजयानगराम के राजा नरसिंहा का बनाया हुआ पुराना किला है। स्टेशन से ७ मील के करीब तीरुपता पहाड़ी पर श्री बैनकतासा पेरुमल का पुराना और नामी मन्दिर है जिस के दर्शन को यात्री देश के सब हिस्सोंसे सारा साल आते रहते हैं पर सितम्बर के महीने में ब्रह्म ऊतशावम तेहवार के मौके पर यात्री बहुत जियादा आते हैं॥

मद्रास रेलवे में रेनीगुण्टा मद्रास से ८४ मील है तीसरे दर्जे का किराया डाक गाड़ी में १=) और सवारी गाड़ी में ॥।=) लगता है।

रानीपुर रोड।

यह कसबा जी० आई० पी० रेलवे के रानीपुर रोड स्टेशन से २ मील सुखनई नदी के किनारेपर है इस में एक बहुत खूबसूरत मन्दिर है जिस के बड़े ऊंचे कलश हैं। बाजार में घर पुराने और खूबसूरत हैं इस की सुन्दरताई इस सबब से और भी जियादाहोगई है कि नगर के बीच में सड़क के किनारे पर जैनियों के छोटे छोटे मन्दिर हैं॥

रानीपुर को ऊर्छा के राजा पहाड़सिंह की रानी हीरा देवी ने १६७८ में बसाया था॥

यहां डाकखाना जैनियों का सुन्दर मन्दिर पुराना किला और एक अच्छी सराय है॥

रानीपुर रोड झांसी से ३४ मील और तीसरे दर्जे का किराया ॥) लगता है कभी २ देशी गाड़ियां स्टेशन पर मिलती हैं॥

रामटेक।

सेंट्रल प्राविन्सिज़ के जिला नागपुर से २४ मील के फासले पर नगर है। यह जगह सदा पवित्र मानी गई है सब से पुराना मन्दिर सुर्ख पत्थरों का बनाहुआ है और नगर के उत्तर की तरफ पहाड़ी पर है। और "हमार" पन्थ ब्राह्मण कहते हैं बाजे लोग कहते हैं कि वह राक्षस था। इस मन्दिर के पास परवार मन्दिरों का एक सुन्दर झुण्ड है जो नये बने हुए हैं पर इन सब से बढ़कर पहाड़ी के पश्चिमी किनारे पर रामचन्द्र जी का मन्दिर है। नगर के पास अम्बाला गांव में नवम्बर के महीने में एक मेला होता है जिस में एक लाख के करीब लोग आते हैं रामटेक पानों के लिये बहुत मशहूर है॥

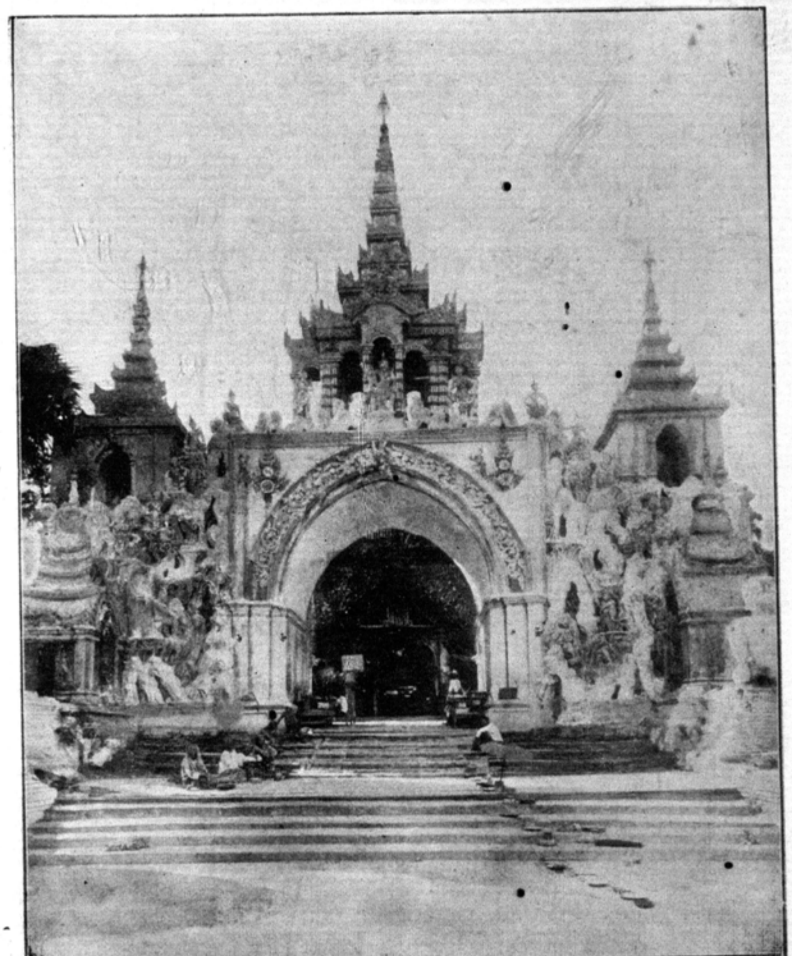


Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.

रंगून का बड़ा पगोडा।

नागपुर स्टेशन बङ्गाल नागपुर रेलवे के रस्ते कलकत्ते से ७०१ मील है तीसरे दरजे का किराया ७।) लगता है। नागपुर में सावरी मिलती है॥

रामटेक में एक धर्मशाला भी है॥

रंगून।

बर्मा देश की राजधानी है और समुद्र से २१ मील के फासले पर ईरावदी नदी की एक शाख के पूर्वी किनारे पर वाक़े है॥

कहते हैं कि इस वक़्त के रंगून की जगह पर पहले एक गांव दो भाइयों ने अंगरेज़ी सन् से ५८५ वर्ष पहले बसाया था यह दोनों भाई एक दिन ५०० गाड़ियां सौदागरी माल की लेकर उस जंगल में से गुज़रे जहां बुद्ध रहता था उन्हों ने उस को कुछ शहद नज़र किया और अरज़ की कि कोई चीज़ देवें जिसका वह आप की निशानी समझ कर आदर करें। गौतम ने अपने सिर के आठ बाल उनको दे दिये जिनको वह अपने देश ले आये और रंगून के पास पगोड़ा बनाकर उस में रख दिया यह पगोड़ा शवे यानी सुनहरी डगौन कहलाता है और एक छोटी सी पहाड़ी पर बना हुआ है जिस को काटकर ऊपर नीचे चबूतरे बनाये हुए हैं जो ईंटों की दीवारों के सहारे खड़े हैं पगोड़ा ३०० फीट ऊंचा है और उसके गिर्द मठ बड़े २ शेर, झण्डे और बहुत मूर्तियां बनी हुई हैं। सवेरे आदमी और औरतें अपने २ चढ़ावे सामने रखकर घुटनों के बल पूजा करते हैं बूढ़े सब जगह झाड़ू देते हैं और दराज़ों में से घास निकालना पुण्य समझते हैं बड़े २ घण्टे बजते रहते हैं। हर एक आदमी चढ़ावा लाता है जो अकसर फूलों का गुच्छा होता है और बहुत करके अच्छे से अच्छा भोजन होता है जिस को पत्थर के बड़े २ बासनों में मन्दिर के गिर्द रख देते है। रंगून बड़ा सुन्दर शहर है यहां से चावल और लकड़ी के लट्ठे बाहर जाते हैं॥

हर इतवार के दिन या विलायती डाक आने के पीछे कलकत्ते से रंगून और मौलमीन को अग्नबोट जाते हैं॥

रामपुरा ।

राजपूताना की रियासत उदयपुर के सदरी दरे में पार्श्वनाथ के जैनियों के मन्दिर हैं। कहते हैं कि इन मन्दिरों को धर्म्मा सेठ ने १४४० ईसवी में ७५ लाख रुपया खर्च करके ब ाया था। पहल या छोटे मन्दिर में काले संगमरमर की पार्श्वनाथ की मूर्त्ति है और बाहर की तर्फ मूर्त्तें बनी हुई हैं। बड़ा मन्दिर २६० फीट लम्बा और २४४ फीट चौड़ा है और उसके गिर्द दीवाल है और अन्दर ८६ कमरे हैं जिन में हर एक में पार्श्वनाथ की मूर्त्ति रक्खी है। यहां हर साल माच और सितम्बर में मेला होता है जिस में १० हज़ार के क़रीब लोग आते हैं॥

रामनाद ।

मदरास अहाते के मदूरा ज़िला और रामनाद ज़मींदारी में सब से बड़ा नगर है जिस में तीरुपलानी या थेरबसायानम और देवीपत नम या नवापशनम दो पुराने मन्दिर हैं। यह दोनों मन्दिर स्टेशन से ५ और १० माल उत्तर और दखिन की तर्फ वाक़े हैं पहले मन्दिर का ब्रह्मऊतशावम जूलाई और अगस्त में होता है और चेत्रई तेहवार अप्रैल और मई में होता है। दूसरे मन्दिर के रामेश्वरम जाते हुए यात्री दर्शन करते हैं। हेड असिस्टेंट क्लकटर, असिस्टेंट सुपरिनटेनडेंट और सब रजिस्टरार का यहां हैड कुआर्टर है। हर बुध को वहां एक मेला भी होता है॥

रामनाद साऊथ इण्डियन रेलवे की मंदापम ब्रांच पर स्टेशन है मदरास बीच से इसका फासला ४१५ मील है तीसरे दरजे का किराया ४॥=) लगता है॥

राम केला ।

बंगाल अहाते के मालदा जिले और सागर दिगी की गिर्द नवाह में पुराने गौर के पास जेठ (जून) के महीने में एक मेला होता है जिसमें ३० हजार के करीब यात्री मालदा और आस पास के जिले से आते हैं । इस मौके पर कृष्ण जी की पूजा होती है । और चढ़ावे चढ़ाए जाते हैं । विष्णु के अधीन इस मौके पर विवाह करते हैं यह मेला ५ दिन तक दो भाइयों रूप और स्नातन गोस्वनी की यादगार में होता है । यह दोनो भाई गौर के बादशाह हुसैनशाह के वज़ीर थे पर पीछे बैरागी हो गए और विष्णुमत के सुधारने वाले चैतान्या के चेले होगये थे । इस जगह बहुत से ताल भी हैं ॥

काटीहार गोदावरी रेलवे खुलने पर मालदा गौर के लिये सब से पास रेलवे स्टेशन होगा ॥

रजौम ।

बङ्गाल नागपुर रेलवे की छोटी सी १० मील की शाख पर जो बड़ी लाईन से अमनपुर स्टेशन पर मिलती है रजौम स्टेशन है और महा नदी दरिया पर वाक़े है । इस के ५ मील उत्तर की तरफ चम्पा रणय का रूखों का पवित्र कुण्ड है, कहते हैं बुद्ध इस में तप किया करता था । उस जगह बहुत जैनी यात्रा के लिये आते हैं ॥

हिन्दुस्तान में जैनी लोग अकसर व्योपारी या शाहूकार हैं और यह लोग बहुत दान पुण्य करते हैं और पशुओं के हस्पतालों के लिये रुपया देते हैं । जैनीलोग कहते हैं कि जैन मत बुद्ध मत से भी पुराना है और बुद्ध का उपदेशक जैन मत से ही लिया हुआ है । यह लोग अपने तीर्थ पहाड़ों और २ सुहावनी जगहों में बनाते हैं ॥

रजौम में चम्पारणय जाने के लिये बैल गाड़ियां मिलती हैं,

एक गाड़ी का किराया १।) से २) तक होता है। रज़ीम और चम्पारगय दोनों जगह सराये और डाक बङ्गले हैं। रज़ीम से अनाज और लाख बाहर जाती हैं। रज़ीम कलकत्ते से ५४१ मील है तीसरे दरजे का किराया ५॥।≶)॥। लगता है ॥

राजा गरीहा

बङ्गाल अहाते के पटना ज़िले में एक पर्बत और खण्डरों के कुण्ड का नाम है यह जगह मगध देश की राजधानी राजगढ़ के साथ पहचानी गई है जहां बुद्ध रहा करता था। इसका जिकर चीनी यात्री हियून संगने किया है और महाभारत में भी है। पुराने नगर कुसनागरापुरा की जगहके पास गरम पानी के सोते हैं पानी में से गंधक की बू आती है और हजारों लोग हिन्दू जैनी और मुसलमान यहां आते हैं ॥

ईस्ट इण्डियन रेलवे के जमुआवन स्टेशन से यहां जाते हैं। जमुआवन कलकत्ते से लक्खी सराय के रस्ते ३०४ मील है तीसरे दरजे का किराया ३।≶)॥। लगता है ॥

रोपड़।

जिला अम्बाला में कसबा और तहसील रोपड़ का सदर मुकाम है। अम्बाला शहर से ४३ मील उत्तर की तरफ सतलुज दरिया के किनारे पर आबाद है। यह बड़ा पुराना शहर है। पिछले जमाने में .प नगर कहलाता था १७६३ के करीब यह मुकाम एक सिक्ख सरदार हरीसिंह के हाथ आया जिसने सतलुज के दक्खिन का मुलक पहाड़ तक दबा लिया १७१३ में उस ने अपनी रियास्त के दो हिस्से करके अपने बेटों चड़तसिंह और देबासिंह को दे दिये रोपड़ चड़तसिंह के हिस्से में आया। चूंकि १८४५ सिक्खों की लड़ाई

में यह खानदान भी सरकार अंग्रेजी के मुखालिफ था १८४६ में जागीर जब्त कर ली गई। सतलुज़ में से नहर यहीं से निकाली गई है ॥

यहां दो बड़े मेले होते हैं एक मुसलमानों का जो जेठ के महीने में शाह खालिद के मजार पर होता है और जिसमें ५००० के करीब लोगआते हैं। दूसरा हिन्दूओं का स्नान मेला सतलुजके किनारे अप्रैल के महीने में होता है इस में भी उतने ही लोग आते हैं ॥

सूती कपड़ा लोहे के हुक्के और लोहेकी और २ चीजें बनती हैं ॥

यहां कई सरायें और धर्मशाला हैं सवारी के वास्ते तांगे और यक्के मिलते हैं ॥

रोपड़ जाने के लिये नार्थ वैस्टन रेलवे के स्टेशन सरहिंद पर उतरना चाहिये सरहिंद दिल्ली से १६५ मील और तीसरे दरजे का किराया २)॥ है सरहिन्द से रोपड़ २५ मील से ऊपर है ॥

रामेश्वरम ।

अहाता मद्रास के मदूरा जिला और रामनाद जिमींदारी में टापू और नगर है। यह ११ मील के करीब लम्बा और ६ मील चौड़ा है और मालूम होता है कि किसी वक्त में बड़ी धरती के साथ मिला हुआ था। इस टापू में हिंदुस्तान का सबसे पवित्र मन्दिर है जिसकी बाबत कहते हैं कि रामचन्द्र जी ने आप इसको कायम किया था रामचन्द्रजी सीता जी को लंका से लाने के लिये इसी रस्ते गये थे और रामायण में इस का बहुत जिकर है। सैकडों वर्ष से हजारों यात्री हिंदुस्तान के सब हिस्से से यहां आते हैं। मन्दिर टापू के उत्तर के हिस्से में ऊंची जगह पर बना हुआ है। इस का अहाता हजार फीट लम्बा और सौ फीट चौड़ा है, मन्दिर की ऊचाई १२० फीट है और इस की बुर्जियों वगैरा पर बेल बूटे खोदें हुये हैं। कहते हैं कि मन्दिर में जो लिङ्ग है उस को

रामचन्द्रजी ने आप यहा रक्खा था। इस को गंगा जल से धोते हैं और वह पानी बेचा जाता है। रामेस्वरम में ६ चत्तरम या टिकने के स्थान हैं यहां हिन्दू यात्रियों को खाना भी बिना दाम मिलता है।

रामेश्वरम साउथइ णिडयन रेलवे पर स्टेशन है इसका फासला मद्रास बीच जंकशन से ४४८ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ४॥।=) और सवारी गाड़ी में ४॥।=) लगता है॥

स्टेशन पर बैलगाड़ियां और पांडे मिलते हैं॥

लाहौर।

सूबा पंजाब का सदर मुकाम है और सरदी के दिनों में पंजाब के लाट साहिब इसी जगह रहते हैं। लाहौर बहुत पुराना शहर है और रावी दरया के बायें किनारे पर बसा हुआ है। पहले दरया शहर के पास बहता था और १६६२ में इसने बहुत नुकसान किया इस सबब से बहुत रुपया खर्च करके ४ मील लम्बा एक बड़ा भारी ईंटों का बंध बनना पड़ाथा, पर थोड़े दिनों के बाद दरया उत्तर की तरफ हट गया और फिर लाहौर के पास नहीं आया, लाहौर किसी जमाने में बड़ा भारी और नामी शहर था और इस के गिर्द १५ फोट ऊंची दीवार था और उस में १३ दरवाज़े थे, दीवार अब गिरा दी गई है। लाहौर दूसरी सदी ईस्वी में बसा था और जब मुसलमानों ने पंजाब पर चढ़ाई की उस वक्त यह शहर राजपूत राजाओं की राजधानी था १७६७ से यह सिक्खों के पास रहा पर अलीवाल. मुदकी, फीरोजशाह और सुबराओं की लड़ाइयों के बाद लाहौर और सारा पंजाब अंग्रेजो के हाथ आगया।

लाहौर का अजायबघर १८६४ ई॰ में बना था देखने के लायक

है इस के सामने अनारकली में जमजमा बड़ी भारी तोप रक्खी हुई है। यह तोप १७६१ में हिन्दुस्तान में बनी थी और अहमदशाह ने पानीपत की लड़ाई में इस से काम लिया था। लौटता हुआ वह इस तोप का भारी होने के सबब लाहौर छोड़ गया था। १८०२ में यह तोप सि. खों के हाथ आई और उनके राज्य से भंगियों की तोप कहलाने लगी यह तोप सिक्खों के राज्य का जादू ख्याल की जाती थी इसी सबब से रंजीतसिंह के राज्य का सिक्का और भी बैठ गया था अनार कली के बाहर की तरफ अजायब घर बड़ा डाक खाना तार घर चीफ-कोर्ट गवर्नमेंट कालिज सैनट हाल जिस में ओरियंटल कालिज भी है, सरकारी दफतर, पबलिक लाइबरेरी इंजिनियरों का स्कूल मिशन कालेज जिस में ला कालिज भी है स्टेशन चर्च या गिर्जा जिस में प ले अनारकली की क़बर थी और माल याने ठंडी सड़क पर लारेंस बाग़ जिस में लारेन्स और मन्टगुमरी हाल हैं, चिड़िया घर और मलका का बुत्त देखने के लायक़ हैं अनारकली नाम अकबर ने अपनी प्यारी लौंडी नादिरा बेगम को दिया था पर एक दिन अक़बर के बेटे जहांगीर की तरफ देख कर हंसने के शक में जीती धरती में गाड़ दी गई थी उस का मक़बरा जहांगीर ने १६०० ई० में बनवाया था॥

मेयो हस्पताल जो इटालियन ढंग का बना हुआ है अनारकली के पास एक तरफ को है इस में १०० बीमारों की गुंजायश है वह हस्पताल मेडीकल कालिज के लिये १८७० में खुला था॥

शालामार बाग़ लाहौर से ३ मील के करीब है इस में खूब सूरत चबूतरे और फवारे लगे हुये हैं। यह बाग़ बड़ा अजीब है और देखने के लायक है गवर्नमेन्ट हाउस लारेंस बाग के सामने माल याने ठंढी सड़क की बाईं तरफ है। असल में यह अक़बर के चचा के लड़के मुहम्मद क़ासिमखां की क़बर थी॥

रेलवे स्टेशन और उस के कारख़ाने भी देखने के लायक़ है। स्टेशन वक़्त पर काम देने के लिये क़िले के ढंग का बना हुआ है। रेलवे के कारख़ाने १२६ एकड़ में बने हुए हैं और उन में दो हज़ार के क़रीब लोग नौकर हैं॥

लाहौर में गरमी में गरमी और सरदी में सरदी ज़ियादा होती है। यहां बहुत मेले होते हैं पर सब से बढ़कर चिरागों का मेला है जो मार्च के आख़ीर शालामार में होता है। इस मेले में ६० हज़ार के क़रीब लोग आते हैं। लाहौर में कई सराय और बहुत धर्मशालाय हैं। एक बड़ी भारी और ख़ूबसूरत सराय जिस को मीयां सुलतान की सराय कहते हैं, स्टेशन से थोड़े फासले पर वाक़े है और स्टेशन के पास एक और अच्छी सराय मीयां चिरागदीन ने अभी बनाई है॥

स्टेशन पर अंगरेज़ों मुसलमानों और हिन्दुओं के लिये रिफरेशमेंट रूम याने खाने के कमरे बने हैं जहां बहुत अच्छा खाना मिल सक्ता है।

लाहौर कलकत्ते से ईस्ट इण्डियन और नार्थ वैस्टरर्न रेलवे में १२१३ मील और बम्बई से जी० आई० पी० में १३०६ और बी० बी० ऐण्ड सी० आई० में १०९८ और मील दिल्ली से ३४९ मील है तीसरे दरजे का किराया ११॥।≈) १६।-) डाकगाड़ी में १०॥) और ३॥) लगता है॥

लाल उदेरो।

नार्थ वैस्टरन रेलवे की कराची लाहौर शाख के उदेरो लाल स्टेशन से ५ मील है। उदेरो लाल कराची से १३४ मील और लाहौर से ६५० मील है तीसरे दरजे का किराया १॥-)। और ७॥≈) लगता है।

एक जगह एक महात्मा के स्थान के सबब बहुत मशहूर है। जिसकी हिन्दू और मुसलमान दोनो मानते हैं। हर साल मार्च के

महीने में इस स्थान का ७ दिन तक मेला होता है जिस में ३० हजार के करीब लोग आते हैं ॥

यहां एक सराय और एक धर्मशाला यात्रियों के विश्राम के लिये है। स्टेशन पर ऊंट टट्टू और गाड़ियां किराये पर मिलती हैं ॥

लखनऊ।

यह शहर अवध में है और हिन्दुस्तान में कलकत्ता बम्बई और मद्रास के सिवाय सब शहरों से बड़ा है। यहां छावनी भी बड़ी भारी है जिस में रिसाला अंग्रेजी और देशी पलटनें और तोपखाना रहता है सआदतखां जिस ने अवध के राज की नीव रक्खी १७३२ में यहां का हाकम हुआ और उसने लखनऊ को अपनी राजधानी बनाया। १८५६ ई० में नवाब की खराबियों के सबब अवध सरकार अंग्रेजों के पास आगया। लखनऊ में देखने के लायक यह जगह हैं। रेजिडैन्सी, बेली गार्ड दरवाजा मच्छीभवन इमामबाड़ा हुसैन-आबाद, मारटिनियर कालज जिस को मेजर जनरल कलाड मारटिन ने बनाया। इस साहिब का काल १८०० में हुआ और उन की कबर कालिज के पास है। विंगफीलड पार्क बड़ी सुन्दर है इस में अच्छे २ फुलों के पौदे हैं अजायबघर आकाशलोचन लोहे का पुल आलम बाग जहां जनरल हैवलाक दफ़न है, दिलकुशा जहां उन का काल हुआ सरबाग और छतर मनजिल भी देखने के लायक हैं॥

लखनऊ में कमिश्नर साहब का सदर मुकाम है। यहां कई सराय और होटल हैं सवारी हर वक्त मिलती है॥

लखनऊ ईस्ट इण्डियन और अवध रुहेलखण्ड में कलकत्ते से ६१६ और बम्बई से जी० आई० पी० रेलवे में ८८५ मील है तीसरे दरजे का किराया ६।≈) और १०।) लगता है ॥

लुधियाना ।

सूबा पंजाब में ज़िला लुधियाना का हैडकुआरटर और नार्थ वैस्टर्न रेलवे का लुधियाना धुरी जाखल रेलवे के साथ जंकशन है। दिल्ली से इस का फासला २३३ मील और लाहौर से ११६ मील है तीसरे दरजे का किराया २।≈ और १।-)॥ लगता है । इस नगर को लोधी वंश के यूसफ और निहंग दो भाइयों ने १४८० में बसाया था और होते होते १८३४ में सरकार अंग्रेजी के पास आगया । यहां काशमीरी लोग और काबुल के जलावतन किये हुये शाहजादे बहुत रहते हैं ॥

लुधियाने में दो मेले होते हैं एक मुसलमानों का जिस को रौशनी पीर साहब कहते हैं जून के महीने में ४ दिन तक शेख अबदुल कादर जीलानी के मज़ार पर होता है इस में ६० हजार के करीब लोग आते हैं । दूसरा हिन्दुओं का मेला अपरैल के महीने में होता है इसको चैतचौदस का मेला कहते है । इर्द गिर्द के गावों से लोग बुढा दरया में स्नान करने आते हैं यह मेला थोड़ी देर रहता है पर इस मौके पर मालमण्डी भी लगती है वह एक हफ़्ता रहती है । ५५ हजार लोग और ६ हज़ार के करीब पशु मण्डी में आते हैं ॥

लुधियाने में अनाज की बड़ी मण्डी है । यह शहर पशमीने के दोशालों सूती कपड़ों लुङ्गियों गलूबन्दों जूराबों के लिये बहुत मशहूर है ॥

यहां कई सराये स्टेशन के पास हैं और पासही एक डाक बंगला भी है सवारी हरवक़्त मिलती है ॥

वडाली गुरू ।

सूबा पंजाब की तहसील और जिला अमृतसर में गांव है

जो अमृतसर शहर से ४ मील के करीब है और नार्थ वैस्टर्न रैलवे के छेहरटा स्टेशन से एक मील के करीब है॥

जनवरी के आखीर में इस गांव में बसंत पंचमी का मेला होता है जिस में ३० हज़ार के करीब लोग आते हैं। गांव के पास एक धर्म्म शाला में शुक्ला पंचमी के मेले भी होते हैं। दमदमा साहिब गांव के पास है यहां भी लोग बहुत आते हैं॥

वडाली गुरू में सिक्खों के छठे गुरू हरिगोबिंद का जन्म स्थान है॥

अमृतसर में वडाली गुरू जाने के लिये सवारी मिलती है॥

छेहरटा स्टेशन लाहौर से २६ मील है तीसरे दरजे का किराया ।-)॥ लगता है॥

बला।

सूबा पंजाब जिला अमृतसर की तहसील में गांव है जो नार्थ वेस्टर्न रेलवे की अमृतसर पठानकोट शाख के अमृतसर और वैरका स्टेशनों के बीच में वाके है॥

गांव में सिक्खों के नौवें गुरू तेग बहादुर का मन्दिर है। कहते हैं कि गुरू साहिब ने इस गांव में दो घंटे विश्राम किया था। फर्वरी के महीने में यहां हर साल एक बड़ा मेला होता है। जिस में ३० हज़ार के करीब लोग अमृतसर और ईद गिर्द के गाओं से आते हैं॥

यहां कोई सराय या धर्म्मशाला नहीं लोग शाम को अपने घरों को चले जाते हैं॥

अमृतसर लाहौर से ३३ मील है और वैरका ३८ मील है तीसरे दरजे का किराया ।=) और ।≡) लगता है। अमृतसर में बला जाने के लिये सवारी मिलती है पर वैरका में नहीं मिलती॥

वाटी मोट्टा

मद्रास अहाते में नगर है इस में विष्णु का बड़ा और सुन्दर मन्दिर है जिस को वेंताद या मित्ताडू ने बनाया था इस के अन्दर अच्छा काम किया हुआ है और गिर्द का नजारा बड़ा सुहावना है। यह मन्दिर एक ताल के किनारे पर है जिस के इर्द गिर्द पहाड़ियां हैं। यहां हर साल ब्रह्म उत्सव होता है उस मौके पर बहुत यात्री आते हैं॥

वाटीमीट्टा मद्रास रेलवे की नार्थवैस्ट लाइन पर स्टेशन है इसका फासला मद्रास से १४७ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में १॥=) और सवारी गाड़ी में १॥-) लगता है॥

विरावनालूर।

साऊथ इण्डियन रेलवे पर स्टेशन है इसका फासला मद्रास बीच जंकशन से ४६२ मील है और तीसरे दरजे का किराया ५-) लगता है॥

स्टेशन से २॥ मील उत्तर पश्चिम की तरफ थीरुप्पदामरुथुर गांव में शिवजी का मन्दिर है जिस में जनवरी या फरवरी के महीने में पूसम का तेहवार होता है इस में बहुत यात्री आते हैं विरावनालूर में कपड़ा बहुत बनता है॥

विरावनालूर में तीन चत्तरम हैं जो स्टेशन से १॥ मील के फासले पर हैं यहां ब्राह्मणों को बिना दाम खाना मिलता है। एक चत्तरम थीरुप्पदामरुथुर में भी है पर इन दोनों जगहों में बंगला कोई नहीं॥

स्टेशन पर बैल गाड़ियां किराये पर मिलती हैं, किराया